



ASHA ARCHIVES

ਸ਼੍ਰੀ ਮਾਤਾ ਜੀ

1.235

ASHA ARCHIVES



१०८ नमः ४ श्री अङ्गिकाये ॥ दगु न यायठ न दव. ऊऊमानस्य अङ्गन दारु वा. यात्रि
 आदिन विर्यह ॥ गुनस्य आसंगन वाक्य उय ॥ न आसनिनासियागिना सुगर्ग गुन
 यव्वकी ॥ वृथ दृष्टा दृष्टे ॥ समेनस्य ययवम ॥ अमे ये ग द्रुयित्यर्थ निमकनका ना
 म्यह ॥ गनवाकादविय ॥ ऊऊमानन गुन्यानीविय ॥ गुनस्य ऊऊमानयातविय ॥ ॥
 यादयुक्तालन आषधि ॥ ववायियं गु सुनरि उमिनी चयनं लुथा ॥ वालमासीनथावा
 ना ॥ समरागानिकानयन ॥ यिष्टादकनसुनरा सलदकं कलानथा ॥ उष्टादकं द्य
 नमस्य वहिष्ठननिष्ठाययन ॥ ऊऊमानस्य आगम कृदिस आसिआदिन सुयोद्य ॥

यादाव. उवायक. गलवाकाद. ॥ ॥ दवया अयस. यथराजनयाचक ॥ अथादि मां
 सनकगुह्यादि ॥ यागिनादिनसगनस्य. कश्चावेनयायमाल. अथादिमासनकगु. गुन
 नमस्त्राव ॥ मालनाय ॥ ० ॥ यश्चवलिदयात् ॥ साधनकदा ॥ विनयनात्यादि ॥ वलि ॥
 जाय ॥ लाय ॥ नर्थन ॥ अष्टविंशति ॥ अविनासाद्यादि ॥ एकानक ॥ अश्वयुर्व ॥ वलिवि
 सूर्जन ॥ यागिनिनादिनसगलसं ॥ वलिलादासवाय. गुनमधुलस. नंदाखान ॥ अग
 मसवाय ॥ दालयुजाआदिन. निर्यकर्मयाथ ॥ मधुलथेलठमाल ॥ धनलिउरुन
 दयुलिसकर्मखादयाय ॥ वलि ॥ नवात्माआदिन ॥ सकलरि. विद्यांजलि द्यय ॥

२ सकलवलिठ. वलिलादास ॥ उरुलयाक्यात्. उथिलादालीखसक्य ॥

वलि ॥ ऊजमानधियाअलिद्ययक ॥ धूय ॥ दीय ॥ जाय ॥ लाय ॥ सवर्क ॥ माहकाविज
 य ॥ विदव ॥ निर्यकर्मरुका ॥ यासाक ॥ कतिस्मय ॥ यागिनादिनविय ॥ गिलविसूर्जन
 ॥ ॥ सूर्याद्य ॥ आचार्ययुजा ॥ दक्षिण ॥ ऊजमान. वदनादि आणीव्यद ॥ धनक्रिन
 सयात्रिभि ॥ ॥ ननावाधियागावासयविधान ॥ अगमस. लजथ ॥ उधनविधि
 नवकी ॥ वगिसयूनवाकक ॥ वाकविलिदगाविद्यात् ॥ अगिनादरुठकादिव ॥ उवाया
 दगमलेव. वलिदायात् ॥ विवकन ॥ एगलवकमाक्या. दीयजागस्यमधुल ॥ वाय
 विधि ॥ त्रिकाषदान. मदायाय ॥ यागजवलास ॥ अशुज ॥ यागखवलास ॥ अर्धयाक ॥

३ ऊजमानवर्क. वृथिण ॥ मथलिकाष ॥ वटकार्ण. वास. ८ दक्षिणादन ॥ वाकयजमनकीउ

यागद्वयन कंच ॥ षट्कानसवाय ॥ वाकस. कचल ॥ याकलिस. लचल ॥ यंकलिस.
जलचल ॥ वाकलिस. सचन ॥ यकलिस. सर्वचन ॥ याविन. काल ॥ धयायिवन. सयन
यागद्वय. वगिलियाग्रिवलि ३२ ॥ धयायिवन. जियागखाल १० ॥ हुंदादि १० ॥ हुं
कादि १० ॥ वृक्षाद्यादि ८ ॥ अग्निगाझादि ८ ॥ यागद्वयन. दाय. वाद. धन ॥ मधु लया
खवस. यश्वलि ५ ॥ धमधुलयाजवस. कुरु ॥ कुरु याद्वयन. सुमयागक. ईला ॥
धन आगमसवयविधि ॥ ॥ मूलनलसवसयविधान ॥ निव. गकि. कुरुया
न. विकार. षट्कान ॥ धयाद्वयन. यश्वलि ॥ यागिआदिन. सगनसु. वायति य

नियनवाय. मालका ॥ धनसु. खवसवलि. जवस. सय. शागयाग. दगुलिराजावासीद
धन वासयविधि ॥ ॥ अथवनसाधन ॥ गुनूनस्कावादि. आत्मयुजा. न्यास ॥ न
कांकां नम ॥ बलरुआसाधनय ॥ अग्निरुयन ॥ नैकांकां नम ॥ धमकुनवाय
॥ सावकना. यवाकना. इद. धन. साखन. धनयक्षकलकुरु ॥ गयतीनजयलयधन
२० ॥ वनीनीनवात्मा खउं. गनयुजा. आवाक. धनमूडा ॥ कांकां नम ४ ॥ धमकुनवा
ल. कान ॥ वनसकलनाठ. (थयाखयाय ॥ धनवनसाधनविधि ॥ ॥ यादयका
लन. आखविधि ४ ॥ वहा. ययं. गु. उनगी. कसहोले. शाखधु. वाल. जठामास. वालमासहा

॥ धनसमसागयादाव ॥ काटालसग ॥ ववकीवायाव काटालस काकलीखथदाव
वासलग ॥ **सूर्यार्घ्याय** ॥ कलिकवखकनायादि ॥ यागिआदिन गलवाकाठ ॥ ७ वाय
क जजमानस्य ॥ **॥ दीयकायाय ॥** थालसूर्ययागन ॥ गुननमस्कान न्यास जल
याग सूर्ययाग गुगुदि आत्मयुजा ॥ विन्दुगय ॥ गकावत साखल ॥ **॥ आवधि ॥** जला
जातखाल लवंग रुलउ वदवउ श्रीवल मलव यिथलि पुंठि ॥ **॥ धनडाखधि ॥** धनि
इइ कलि सूर्यज नवडय ॥ **॥ धनगयाव** काय वीनडय
न ॥ सर्वकादयक विकालखनदान ॥ **॥ धन** यशवन् ॥ **॥ अजुज** सूर्ययाक कंव

कर्यन ॥ **॥ धनगयादकाय ॥** कादयिगाल धलग ॥ वकदिवलि गिवसकथाठ न ॥
दधनव यवसय विवामालका यादाव गिव गकि दधसगयाव विवानदयकाव था
लसवाय ॥ कवलआदिन वनदकाठ थालसपिकानयायाव थठन ॥ **॥ कालयाडावधि ॥**
लामल मनव यिथनि पुंथि स्यध धनवासल ॥ **॥ माहायागसलयलय ॥** कर्यल गीख
पु कसुनि रुलजकुम वकवदन सुगार्गमलीखनवलाव नयय ॥ **॥ कवन** जलवल
उवन श्रीदज सूर्ययाक कंव श्रीलि ॥ **॥ धनयागस ॥** पूरुयाठन दीयआदिन वनसक
लठ आगमस थव ॥ **॥ आयसवायन ॥** **॥ कसुथन ॥** गुनस्यजकुजादाव दवसायनान ॥

यागिस्थं श्रुतिपुत्रं यादार्थना ॥ **गुनस्यैवदय** ॥ वरुणागार्यहवक नकन कानहमानयित्वं
खानखानविशुवनगुन उभनसुयसत्र ॥ वद सूर्यादया ऊरुगयर्थदग ॥ **थव २थायसग ॥** व
वसकलद विकनिश्वननायाद्यादाव सर्वयाय ॥ यागिनादिन सकलद गुनस्यैवामद
हन विर्यद ॥ **वाक्यदय ॥** नै ३ दीनार्थवसर्वहर्ग्यादि ॥ **॥ यथराजनयावक ॥**
गुनस्यैवयागिनिनादिन सगल वाकाठ यूजायादह ॥ अर्धयागकायाव ॥ **सूर्यार्ध ॥** अथा
दिमसिनदय ॥ **गुननमस्काव ॥** यन्निममूर्त्तयास ॥ **जलयाग ॥** अर्धयाग ॥ **आत्मयुजा ॥** आ
श्वनशकत्यादे ॥ **सिंहासायनम ॥** यैवयुगासायनम ॥ **सादावक्रियगासायनम ॥**

सवासायनम ॥ **थान ॥** वरु ॥ **नैविनयनयाइकां ॥** श्रीखगुचदनीदिव्यं गंधायधुमनाहन
॥ **शुभिनैललागाथ वदनीयतिगृकिर्ता ॥** सिध ॥ **काविनरस्रयाइकां ॥** विनश्वनामदावि
न विनरस्रविद्विर्ता ॥ **उलाकाकर्मनादवा सिधु नाहनमूर्त्तम ॥** माहनि ॥ **गोमाहनियाइः**
कां ॥ माहनैकामसंसिद्धि सुहायाकवल्लुथा ॥ **अऊलश्वकसातारु माहनैदिष्टिदाय**
कां ॥ जजामका ॥ **कुंजकायविनकयाइकां ॥** जकायविर्गयनमयविर्ग यजायनजसजयन
का ॥ **ग्रायुद्रमूर्त्तयतिमधसूर्य जकायविर्गयनमभुगज ॥** खान ॥ **को नानादुग्गालेका**
वयथयाइकां ॥ नानायथुगभानि मालयाकधुमादयत् ॥ **सोराहसिद्धिदंरुड यथावा**

दनमूलमं ॥ वसु ॥ नानावसुविविशिष्टं सिंधुवानसुसाहिना ॥ दवाअनुमिं ॥ वसु सर्वलंका
 नसाहिने ॥ यजन ॥ उज उवडा कडिना कुं उलाका कर्षनि का कामागदावली कां काम
 हाका रकाविनी त सा सगयाइकां ॥ ॥ उम नसा रगानि कुं कडिकाये कां जादू धान
 म्रधान म्रधानामुखी कुं कुं किनि २ विषयाइकां ॥ उम नसा रगवनि कुं कडिकाये कां
 कुं कडि उलेखनम म्रधानामुखी कुं कुं किनि २ विषयाइकां ॥ उम रगवतितिष्ठ कुं
 कुं कडिक कां कुं कुं खगव धान म्रधानामुखी किनि २ विषयाइकां ॥
 उम संहं कं मं तं नयूं आन च लकि रो व वा न च छा म हा वि या ना अध्वनी हं सं कं मं तं

क ३

रुचनी ३

वं नयूं याइकां ॥ उम यां यागिनि त्या याइकां ॥ यिया ऊलि ३ ॥ वसु ॥ यानि मूडा ॥ वनि
 ॥ उम य कविग यागिनि नां या ० जा कयजा यागजा गरीजा संदाइजा यकवि यागिना
 ती खचनी गाचनी उकाइनी दिइनी वडय अनवाइनी नां पिऊ गमिनि नां ज (था य
 य नाना वलि गृह २ ममसिद्धि कर्षकु ३ रुट्खाहा ॥ गुबूखी याग उवलान खवलान
 मयजा द्यवयदय ॥ उम वूकी गृह नविन सिद्धानामनुमादिता लाकाय वावना थय निः
 मलीरू टिकायमं ॥ नसा वनायी सुवस्य दवगय वनिर्मितं ॥ निक वी स कलात्यर्त कमलय
 उनमाय हं ॥ विरुद्राय ॥ मूडाया ॥ उम गृह विलुं मं धर्म सिद्धानामनिभादिता ॥ वक्र क

प्रियवाञ्छले नृकाकारं नमामहे ॥ स्वागर्भं भवतां मन्त्रनागविवर्जितं ॥ अथाथैकविनि
मूर्कं गत्वैकं ममृगं वया ४ ॥ **गुर्वर्थाय गच्छाय ॥** वलिविय ॥ वलिवृद्धं महाविन वनूने वय
साधनं ॥ मादकसद्वत्सलानं निर्मलं हृदिकायमं अतमहावसीदियं सर्वशुभसदादिः
नं ॥ सुकलं निष्कनं शुभं यद्ययं नममहे ॥ **आवाक ॥** यानिमूडा ॥ धूय दीय जा
यने वय ॥ अतमहावसीदियं वसवसि समनिनं ॥ मयानिवदिनं शुभं गृहानयनम
नं ॥ नेयर्थं गृहनादया लकिमहि वलाकनू ॥ अयमृह्यरुवदव यनतस्यायना गति
॥ **जाय ॥** यायागित्यासाहा १० ॥ नृसिद्धवदकिमभु लयमहं संपुदय ॥ सिद्धवधुसविः

ल यितय्यमाला ऊहायविनवसना अनधूयदाय ॥ नाशूलमादकरु लानि नि अनन
संयुक्त्यायमलिना मिषीमानयूकं ॥ नृगानिसर्ववचिना यवियुजिता दविऊ जायत
तिदव गणावसर्व संयुजितारु लमिदं जियसंयुदामि साकिसदावत्तुमं जलदहल
॥ निर्विषं वानजागु आदिमव्यावधानि ॥ **अस्मत्** पुन्यलाकानां निर्वैरुवत्तुसर्व
दा ॥ ॥ जासाहदानिरुदयनमयवकथा वत्तुमालासनहं वृक्षविसृष्टवृद्ध सक
लयकिमृगे रूतनिर्णयमनर्थं ॥ सुहृत्साहृत्साहृत् वनमृगह वल वायहृत्सु वानं
स्यामानकावृक्षज्ञा पुनमतसवना सिद्धिसोनायनार्थं ॥ जादवा ऊकि कार्या कम

कलसकल मल्ललथलिलका कृणायि।भययि० गगनगुहवृहे यागिनादिनवृन्द ॥ दव
 र्यं ककृताथ यजनयनिविधि दीयजादिर्यथा ॥ विद्यार्कं अयमूर्कं मरिमनरुलदा वा
 जलश्रयदाना ॥ निद्रवयं जगदृक्षानलवाक नंगा वक्राश्वनामृतधरा नलमूधुमाला ॥ का
 थाधनासवयूना नमविन्दुरुका तलेनमासुसुननं कलजागमाया ॥ ॥ यागिनाकामनू
 या गुनगगनवृन्दं नमकारुधवावा मलार्ककालमाला गुदितगलठटि वक्रवल्गुनिर्या
 ॥ लिङ्गयार्गकयाली नृनिमयिविदधति सुम्भनासूयसना ॥ तृकानासाधकानां मरित्विः
 धितवली प्रयमानायसना ॥ ॥ हुं हूँ ह्रीं नितिकियासायादि ॥ सामानकायादि ॥ गम

यन्त्रिमज्जराजस्रमहामाया श्रीजकि कादयाये श्रीसिद्धिलक्ष्मीदयाये यविशवाहन निमिः
 त्यार्थन अर्द्धवाणिनिसार्धन दीयजागार्धन निमित्थार्थन श्रीश्रीश्रीजकि का दयाये अथसा
 म्पायरुववलदायिनातर्वतु ॥ दक्षिर्न ॥ अगुर्गभादि ॥ निर्विनेययां ॥ धनयात्रियूजावि
 धि ॥ ॥ कृण ॥ वदक ॥ गम ॥ वक्रायादि ॥ गुनमल्ल ॥ श्रीकल ॥ सिद्धिलक्ष्मी ॥ यागि
 निसयाका विविनयाय ॥ थव २ मज्जन प्रियाऊलि ॥ वलि ॥ जाय ॥ साय ॥ थव २ स ॥ यश्च
 वलिर्न थार्थ ॥ आस ॥ मर्तु थव २ स ॥ वलि ॥ जाय ॥ साय ॥ थव २ सन ॥ दक्षि ॥ धनगुन
 र्थयाय ॥ ॥ ऊजमानर्थ ॥ निखानाथयूजायाय ॥ आधालगकयादि ॥ वयासायनम ४ ॥

(मोक्षार्थं यादि ॥ दक्षि ॥ दवर्कं थार्थ ॥ आसन ॥ यजन ॥ जाय ॥ साय ॥ ७

[illegible]

तथा दवा चर्चनी ॥ मूर्यार्च ॥ अथ मांसनक्षत्र ॥ गुननमस्का ल ॥ मालनीय १० ॥ यश्च वलि
दद्यात् ॥ यश्चिमदगुलि स्वाध्याय ॥ धूय ॥ दाय ॥ जाय ॥ लाय ॥ सर्वका ॥ शक्ति गूय ॥ सना
नगूय ॥ माहामाया ॥ विदव ॥ निरु कर्म रुक् ॥ गुनययश्च वलि ॥ विदव धूय वन्द्य गूय
दया क्रूर यूजा याय ॥ नै यमात्राय नम ॥ अतिगा जादि ॥ अद्याव ॥ हंते कूल क्रूर रुष्टाः
निकाय अलि मूर्ख ययाइ कां ॥ शिक्षा ॥ यउंग ॥ वलि ॥ धन गिद ॥ ॥ नै निहात्राय नम ॥
वृक्षाद्यादि ॥ वरु ॥ ॥ हंते कूल क्रूर हानिकाय अलि मूर्ख ययाइ कां ॥ यउंग ॥ वलि ॥
जाय ॥ लाय ॥ वरु कायत्यादि ॥ धन वन्द्य गूय दया क्रूर यूजा ॥ ॥ गुन आदि नम

लस्यं यागिनिष्कश्रुत्वा काय ॥ वाक् ॥ श्रुत्वा यसादगु ब्रह्मगणयागवर्कं श्रुत्वा यसादगु
 ब्रह्मगणसिद्धिलक्ष्मी ॥ श्रुत्वा यसादवयवागीनालाकयाला श्रुत्वा यसादममददिवसर्वसि
 धि ॥ श्रुत्वा यसादविमलं खनूनाकिदार्यं युवाधयत्मास्यैकतावत्सम् ॥ श्रुत्वा विर्गणीव
 वयागनित्यं कवाउष्मन्किरगवान् कूज्ज ॥ श्रुत्वा मयनिर्भलं किदुर्लभं यसाधिदवान
 वयालसविर्ग ॥ श्रुत्वा दानं तस्य कवातिसान्कि कवातिसान्कि रगवाकूज्ज ॥ सगलस्यं श्रु
 त्वा २ क्षय ॥ ॥ गता वयूजाया गवन ॥ होव वल्लुआदिन सर्वलं कालननिय ॥
 पुननमस्कावादि ॥ न्यासयाय ॥ जलयाय ॥ श्रुययाय ॥ हनगुधि ॥ श्रुत्ययाय ॥ गताय

[illegible]

यागित्यायाइकां ॥ नैऋत कचिजागिनी या० जाकयजा सहजा आगजा गतेजा सदाह
जा यकचि ॥ यागिनिनी कचवि ॥ गववि ॥ काकनी दूकनी रुकनी चतुयक्ष नवाकनी
नी ज ॥ आययनानावलि गृह २ ममसिद्धि कर्कशुर्द ३ रु ६ स्वाहा ॥ ॥ नैऋत यमासाययाइकां
॥ नैऋत सुग्री सिद्धि वाम ॥ ध्रुवनायाइकां ॥ वलि ॥ ॥ नैऋत मूसासाययाइकां ॥ नैऋत गंगा
गुं ॥ ४ ॥ शैल कलग ॥ ध्रुवनाययाइकां ॥ ३ ॥ वलि ॥ अवाक स्वस्वमूडा ॥ थव २ मरु
नजाय ॥ लाग ॥ ६ ॥ नियश वलियूजा ॥ ॥ अर्घयाग दयन दाय आदिन चनू स
कलरि दनयानहाय ॥ निष्ठा ॥ नैऋत कजि कायविग्रह कल दायायधामरु गनी कजि

[illegible]

हं कयिला कलाय नमः॥ लं रुयवाहि नमः॥ हं कयवाहि नमः॥ वं अग्नि मधुः
लाय दशधर्म कलाय नमः॥ छुति आसु ॥ ॥ अमुमनु नय काल ॥ यागवउमुमव
हन नयय मनु ॥ अधाव ॥ वज ॥ धूयय गलक ॥ नगायागय नमः ॥ कावसमालिख
वकायविलय ॥ कं नयव्य कलाय नमः॥ खं वं नायव्य कलाय नमः॥ मं हं धूया क
लाय नमः॥ घं यं मनिथे कलाय नमः॥ हं नं कालिच कलाय नमः॥ वं धं नय कला
य नमः॥ हं हं सुषमा कलाय नमः॥ जं थं लागदा कलाय नमः॥ जं नं विश्व कलाय नमः
॥ फं लं वाविच कलाय नमः॥ टं टं याविच कलाय नमः॥ ०ं ०ं कमा कलाय नमः॥

वं नू नमधुलाय दशकलाय नमः॥ मं मं मं मं नं यनमामृत अर्घयागय याइ की ॥ यं
वननयू जा ॥ नं नं किलि २ विवका कनाये हं ॥ अमुयरु ॥ अर्घयागदकनहाय ॥ नगा
वउसुसाल ॥ नं नं नमासगवति ॥ कं कडिकाये जां जां हं धाव अर्धाव अर्धानामुखी ॥ हं हं
किलि २ विवयाइ की ॥ निवि कल ॥ नं नं किलि २ विवका कनाये हं ॥ अमुयरु ॥
याइ की ॥ ध अमुमनु नं नादन ॥ नं नं धाव अर्धाव अर्धानामुखी वरु नूयाये हं ॥ कवर्व
य हं ॥ अदगुलन ॥ ध न वउसुसाल ॥ ॥ उद्यनिर्नय ॥ वधूकवुविनावाग न ॥ उगधहाद
माहिना ॥ नं दययनमंदवा विद्विहिद्विदयका ॥ यागवउमुमव ॥ वरु लुखलु सुसु न

मस्य न समानकं ॥ आयुर्विर्गमाकाय विष्वयार्धमानयत् ॥ हं ते या उयूलयत् ॥ स
 ते या उयविश्वकं कनू ॥ साहा ॥ या उसाधन शिकुतमूडा ॥ यूजन ॥ अद्यानासु ननमनु
 नशिकानाकनि ॥ म (येन) कावलिख ॥ अमृताकलायनम ॥ ॥ मालदाकलायनम
 ॥ ॐ यूषाकलायनम ॥ ॐ उष्टकलायनम ॥ ॐ यूष्टकलायनम ॥ ॐ नल्यकलाय
 नम ॥ ॐ यूष्टकलायनम ॥ ॐ मलिन्यकलायनम ॥ ॐ वदियकलायनम ॥ ॐ कात्य
 कलायनम ॥ ॐ कात्याकलायनम ॥ ॐ प्रियकलायनम ॥ ॐ प्रियकलायनम ॥ ॐ प्रियकलायनम ॥ ॐ
 अनङ्गदाकलायनम ॥ ॐ यूषाकलायनम ॥ ॐ यूष्टकलायनम ॥ ॐ सामम ॐ

लाय आदसकलात्मननम ॥ ॐ गियाउसकलायुजा ॥ ॥ ॐ न ॥ ॐ लाकावसनिशा
 दवी उवाता उवलागिनी ॥ योवलाकननूया ॥ शिनगादियनूयिनी ॥ मन्दिनाव न्दवगन्या
 दशाष्टा उजयानती ॥ खञ्जिष्टलवकुश्र दिल्मिर्ममृननगथा ॥ गदायमवर्नयार्ण सव्य
 रुक्मविनाजिन ॥ रुटका कृणय ॥ खडा निवधवधया ॥ निलात्यलरयविन्द वाः
 मरुक्मयानिनी ॥ दियनसकनागाया रुमातवननुयिनी ॥ खतयग्रासनादवी व
 धयग्रायनिहिन ॥ उर्वरु यमहादवा वान्निदियनूयिनी ॥ कुमनसिद्धिदयैव कि
 यासिद्धिसमगविन् ॥ सस्यनमहाविद्या यायविद्यादिसाधन ॥ महासाकि कन

व महासंयद कायक ॥ महासाकिं दानं तिथी ॥ महायाभि नूजायदा ॥ उर्वसिद्धि कविदवा
 यागयुजामहाफल ॥ **ॐ निश्चि न ॥ अद्या न ॥ वज्र ॥ वनिःशय ॥ अद्या नाशु ॥ वज्र न ॥**
रुका न ॥ सका न ॥ द्वादशाक्ष ॥ वज्र ॥ उवलक मरु ॥ अशकिता ॥ पूजन ॥ ॐ नमो ॥
 न कलाकरा गगन गमिनी ॥ अनकलाक अमृत संचावनि ॥ अनकान च दव ॥ अनकाया
 अनकलक काटि सिद्धि ॥ अनकलक काटि यागि निया इकां ॥ सुवर्ण ॥ नजत ॥ यथा ॥ इवा
 कनया इकां ॥ **हं हं - हं हं महायाग राहा लि काय याइ कां ॥ हं हं - हं हं महायाग रा**
हा लि काय याइ कां ॥ शि याज लि ॥ आवा क ॥ यानि मूजा ॥ जाय ॥ हं हं ॥ १० ॥ हं हं ॥ १० ॥

अउ म ॥ वलि ॥

गाय ॥ कायविशालियुर्ध्व यवममृतमयं न कसिध्व ववर्धु ॥ वक्रा ॥ ववर्धु सुसुता ॥ व
 रुति अहि निसां ॥ पुष्पनायाय दया ॥ साष्टि ॥ विवृया ॥ सकल सुवगता ॥ गावय कि सुद
 वा ॥ सो राहू दिवतका ॥ महिमन रु ल दा ॥ माकल अय दाना ॥ **धन महायागयुजा ॥ ॥**
नगा कवल पूजन ॥ विषुद्वं यव कानं तु ॥ कव न सुन दवता ॥ **धन महायागयुजा ॥ नक म**
पुल पूजन ॥ विषुद्वि वका सायन म ॥ **ॐ नमो ॥** महासिद्धि कव नाय याइ कां ॥ **आ न ॥ ना**
 ली सुगान नंदव ॥ वज्र वक्रि गिलावनी ॥ **विषु ॥** लीजय माला ॥ विष्म सिपय विनामृ
 त ॥ **खग न स मावृण ॥** विषुद्वि वक्र सीहि ॥ **ना ॥** आवा क व नंदव ॥ लक्ष्मी सोता रु

दायकं ॥ **ॐ** मरुताविकाये **ॐ** कलाधिसांतां **ॐ** विष्णुसाकिनाय यकलियू
 विष्णुसासानन्ददवाइकां ॥ वददियसमूर्तन का **ॐ** निष्कलसुसाशितं । आकावि
 ज्ञानदंष्ट्रं कलुलिसनमासुत ॥ **ॐ** गगनलाक रागगरगमिति गगनः
 लाकमृगसंवावनि गगनानन्ददव गगनाम्बा वदुषष्टि अककाटिसिद्ध वदुषष्टि
 लककाटियागिनियाइकां ॥ **आवाक ॥** **ॐ** सर्वकारनिम्डा ॥ **ॐ** वलिगृह २ खाहा ॥ **ॐ**
ॐ कवनसिद्धिदत्त सर्वसंयतिदायक ॥ माकलसदागय निवेदयनमासुत ॥
ॐ निखवल्यजन ॥ १ ॥ **ॐ** अथयवल्यजन ॥ अनाहननेमया २ ववनवः

डदवगा । वकवसुमदागज कलुलिसनमासुत ॥ **ॐ** नारुनवकार्यनमः ॥ **ॐ** नमो
 महासुववायवाइकां ॥ **ॐ** न ॥ यागवसुनिरदव ववाहयाधिलावन १ वदुउजा
 यूककावेके कक्याववामृन ॥ वषरासहिताधारा याधिननिखिलेतथा १ विन
 य **ॐ** वलदव दानिडनियुघातक ॥ **ॐ** यिआलि ॥ **ॐ** धानअधानअधानामुखि व
 दूवयाये **ॐ** मन्त्राधि **ॐ** कांकां **ॐ** अनाहनकाकिनिय गुल्यवाविखानन्ददव
 याइकां ॥ **ॐ** मृकलाकला **ॐ** गगरगमिति मृकलाकमृगसंवावनि
 मृत्यानन्ददव मृत्याम्बा अहलक काटिसिद्ध अहलककाटियागिनियाइकां ॥

कलाकिनाय महायूनाञ्जलिस्तानन्दवयाइकी ॥ वक्रमञ्जुलसंयुक्तं वक्रउडिय
त्रिहिंग ॥ वक्रकाङ्क्षानन्दानन्दं उल्लिखितं नमामुते ॥ १ ॥ नागलाकलागगरकासिनि
नागलाकअमृतसंयाननि नागानन्दवनागमवावलात्रिलङ्काटिसिद्धवलात्रिलङ्का
टियागिनियाइकी ॥ अवाक् ॥ १ ॥ सर्वकषणिमूडा ॥ नूवलिंगरुखा ॥ २ ॥ समूडा
सयसंजाना यद्विर्गयायनामनं ॥ सिद्धिसाराङ्कदद विष्णुयनमामुते ॥ ३ ॥ नमो ॥
अथ सरवलयूजनं ॥ लोभान्नाभिस्तनू सरवलीवक्रदवता ॥ यानवलुमहानजं वक्र
मञ्जुलयूजनं ॥ स्वाभिस्तनवकासायपाइकी ॥ १ ॥ नमंलं वनं यं महासरवलमूलं पाइ

कां ॥ **आन** ॥ वक्रवर्णमहागर्जं सावित्रकृतिलावर्णं ॥ खड्गखट्वा मरुत्तं मृकायागुधना
लयं ॥ स्वाभिष्टनक्तिगावर्कं कल्पवृक्षास्त्रासर्पं ॥ नवीसखनयूयश्च धनधन्यधराजनं
॥ **प्रियाङ्गुलि** ॥ **ॐ** ऊडिकाये कलदायाये **ॐ** सुं यदाधिनां वां नूं नूं स्वाभिष्टनवाकिना
य धृयत्रिभूतं हि सानन्ददवयाइकी ॥ अजायुकादिसंयुक्तं मितायेवात्रियुनि
नं ॥ आदिषट्कविनिकानं कुलुलिसंनमासुगं ॥ **ॐ** सुं वल्यवलाक रोगगर्भमिनि
यवनलाक नमगर्भवात्रिनि यवनानन्द यवनाचा धाउलनककाटिसिद्ध याउ
ननाककाटियागितिदाइकी ॥ **आवाक** ॥ **ॐ** सर्ववसमूडा ॥ **ॐ** वलिगु ॥ **२** खोडा ॥ **ॐ**

ॐ ॥ सर्ववीसर्वविद्यानि ॥ वलविद्यविदधनं ॥ **४** साकूमाकसदालक नूडवयनमासुगं
॥ **४** ॥ **॥ अथसर्वचक्रयुजन ॥** आधनमग्निकानश्च सर्ववसुसर्वदवना ॥ सर्व
दधुमहागर्जं ॥ कुलुलिसंनमासुगं ॥ आधनवकासायनम ॥ **ॐ** सुं सर्वचक्रसूर्य
याइकी ॥ **आन** ॥ सामवर्णयतिकारं चउर्वाकृतिलावर्णं ॥ उल्यना यमरुत्तं म
हायागकनाधना ॥ साकादवमहालक धाननासियनिष्ठिनं ॥ **आ** यसर्वचक्रदवा
सर्वसंयतिदायक ॥ नमारुगवद्वक्रमलाये **ॐ** सुं खवनाउ **ॐ** **ॐ** **ॐ** आधनअकि
नियमनयनिमिगर्नदवयाइका ॥ चउर्वाकृतिलावर्कं चउर्वाकृतिलावर्कं **ॐ** वउ ॥ सर्वदी

यादवाकंड उल्लालनमासुग ॥ **ॐ** नमो भगवते वासुदेवाय ॥ **ॐ** नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 मगसंवाविनि स्वर्गानन्ददय स्वर्गेश्वर वगिसलक कागिसिद्धवटिसलक काटिमागि
 नियादेका ॥ **आवाक** ॥ यं वायदा लमडा ॥ **ॐ** वलिगृह २ खादा ॥ **गाय** ॥ सर्वे वनयावन
 यथा यविर्ददसाधन ॥ **ॐ** कृत्तिद्विकियासिद्धि सर्वे ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
अथ श्रानन्दवकयुजन ॥ **आ** क्लावा नयकानक तिला श्रानन्दकीवन ॥ कावधनक कव
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ कालवदति क्लातया सर्वे मय्युय रंजन ॥ महादावा मादया
 के ॐ यनादउज्जवा ॥ **आ** क्लावका सायनम ॥ **ॐ** नमो भगवते वासुदेवाय ॥ **ॐ** कं कालिकादवी याद

कां ॥ **आ** न ॥ नीलाञ्जननिर्दहं दउवाकृत्तिलावन ॥ स्वर्गद्वक धर्जदवी पुरु
 यागकनदय ॥ **अ** लिमां सनानिर्त्य विस्वसंसावनावनी ॥ **आ** क्लावक क्लिगादवी का
 लिकालविनासन ॥ १ ॥ **कि** ति ४ विक्काकी नाये ४ ॥ **ॐ** नवाभि हां हां ॥ **आ** क्ला हाकि
 नययवा ॥ **अ** खलिमानन्ददयादकां ॥ **आ** नमूर्तिनिवाकारं ॐ काव ॥ **ॐ** सिमूर्ति
 ॥ निकलनिर्गलं दयं उल्लालनमासुग ॥ १ ॥ **कालिका** ति हा कालि मस ॥ सानिनरा
 उनि ॥ **ॐ** नमो भगवते वासुदेवाय ॥ **आ** क्लावक क्लिगादवी का ॥ **आ** क्लावक क्लिगादवी का
 २ खादा ॥ **गाय** ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ **आ** क्लावक क्लिगादवी का ॥ **आ** क्लावक क्लिगादवी का

ना कामसागकिदवा नूडगकिनमासुन ॥ रियाऊलि ॥ १ ॥ ग्रां तां तामसागकिदवा याइ
की ॥ २ ॥ वडया ० नु रदन उठि जाले धयुलु रुथा ॥ काम वू नू रदनैया ० उधुलि सैनमा
सुन ॥ ३ ॥ कुं गिवन त्वाधिकयलु रुगन कियनाय निर्वल सधुवादवायीयाइकी ॥ ४ ॥
वाक्क ॥ मरुामूडा ॥ वलि ॥ मू वलि गृक २ वारा ॥ ५ ॥ या कर्जनामनिदवा सर्वकामरुल
युदै ॥ मायमूक वू सर्ववू सर्वसाकि करीयन ॥ ३ ॥ ॥ यूनयाययूजा ॥ ६ ॥ वू वं वानू
लिमरुयायययु र दानिकाययाइकी ॥ रुकाव सुकाव ॥ वउ ६ ॥ ॥ वाक्क ॥ या वू निमूडा
॥ ७ ॥ यूनयाययूजा ॥ ८ ॥ वनूदकासं ॥ गमनाययामूलमलुन नान्यमाल ॥ ९ ॥ धन

सुनयन्नासनासाने वदयन्नासनहिर्न ॥ एवञ्चात्वा महादवा वा नूनिदिद्यन्नयिनी ॥
 तिष्ठान ॥ अथानामु ॥ धर्मवलि ॥ प्रियाकुलि ॥ जंअ मूं शं कुलकुरुतदात्रिका
 यश्रुलिभूर्ययाइकां ॥ ददयादि ॥ आवाक् ॥ यानिमूडा ॥ अथ ॥ जासाकामाद्भव
 नू प्रवगियतिकना बुक्कनिर्वानधैवे ॥ वकासिधूनवर्ष ॥ यनममृतमय सच्चदव
 स्थित्वं ॥ प्रियकिंदवदवा सुनवननमिता गावितासर्वलाका ॥ सालक्रयग्रहका प्रव
 मतिगिनसा याउवणीऊऊस ॥ अखण्डकवसानार्थत्यादि ॥ धनवनूयजाविभिः ॥
 वगिसिथागिनिवलिविय ॥ दापठा यकावानयाइरूस ॥ अनं वलयनम ४ वलिगृह २

साहा ॥	॥ अं मां घञाय नमः ४ वलि गृह्ण २ साहा ॥	॥ अं मं हानासाय नमः ४ वलि गृह्ण २
साहा ॥	॥ अं गुं सुमूखाय नमः ४ वलि गृह्ण २ साहा ॥	॥ अं वं ऊमूखाय नमः ४ वलि गृह्ण २
साहा ॥	॥ अं तिं तिवलाय नमः ४ वलि गृह्ण २ साहा ॥	॥ अं कुं ववथेय नमः ४ वलि गृह्ण २
साहा ॥	॥ अं ऊं यथमाय नमः ४ वलि गृह्ण २ साहा ॥	॥ अं किं धायाय नमः ४ वलि गृह्ण २
साहा ॥	॥ अं कां सामाय नमः ४ वलि गृह्ण २ साहा ॥	॥ अं यं रिमाय नमः ४ वलि गृह्ण २
साहा ॥	॥ अं ऊं माहावलाय ४ वलि गृह्ण २ साहा ॥	॥ अं ऊं जयाय नमः ४ वलि गृह्ण २
साहा ॥	॥ अं ऊं विजयाय नमः ४ वलि गृह्ण २ साहा ॥	॥ अं धां नृजिनाय नमः ४ वलि गृह्ण २



तन्त्रिमङ्गल

वला
ययेह
उनेला
कसनला
गिरव
वाल
उलाभास
वालभास

1.235

ASMA ARCHIVES

५ श्री विकट यत्नमः ॥ ॥ अष्टौ ज्ञानदा निष्पे नमः ॥ ५

का

[illegible]

साहा ॥ ॥ नैज उं उं गी च न रे व वाय को मा गी ल कि सु हि ना ये व लि गृ द्र २ सा हा ॥ ॥
 नैज मं मं गी का ध रे व वाय वे स वि ल कि सु हि ना ये व लि गृ द्र २ सा हा ॥ ॥ नैज टं टं
 गी उ न्न न रे व वाय वा ना हि ल कि सु हि ना ये व लि गृ द्र २ सा हा ॥ ॥ नैज नैज गी क या
 वि ल रे व वाय उ न्ना य ना ल कि सु हि ना ये व लि गृ द्र २ सा हा ॥ ॥ नैज उं उं गी रा य न रे
 व वाय वा मू ल कि सु हि ना ये व लि गृ द्र २ सा हा ॥ ॥ नैज मं मं गी सी हा व रे व वाय
 म हा ल कि सु हि ना ये व लि गृ द्र २ सा हा ॥ ॥ य न यू वी दि ली ल ना न न नू य उ ड्ड ह
 उ का दि रे व वा य ० द ल व लि वि य ॥ नैज कं रं गं दं हं यू र्वा या भ वि का न रु उ क रे व वा य

व लि गृ द्र २ सा हा ॥ ॥ नैज वं वं जं जं जं आ ग्रे या भ वि का न प्रि यू ना न क रे व वा य
 व लि गृ द्र २ सा हा ॥ ॥ नैज टं टं टं टं द कि ल या भ वि का न अ ग्रे वे ना न रे व वा य
 व लि गृ द्र २ सा हा ॥ ॥ नैज गं थं दं थं न ने स थ या भ वि का न अ ग्रे जि हा रे व वा य
 व लि गृ द्र २ सा हा ॥ ॥ नैज यं रं रं रं म वा न न या भ वि का न का ला क रे व वा य
 व लि गृ द्र २ सा हा ॥ ॥ नैज यं नं लं व वा य य या भ वि का न का ला ल न रे व वा य
 व लि गृ द्र २ सा हा ॥ ॥ नैज लं थं सं हं उ रु न या भ वि का न उ क या न रे व वा य
 व लि गृ द्र २ सा हा ॥ ॥ नैज लं दं हं ली ल न या भ वि का न सी म नू य रे व वा य व लि

गृह २ सादा ॥ ॐ अं अर्द्धया ॐ भिकाल हातक ते न वाय वलि गृह २ सादा ॥
 ॐ अं उर्द्धया ॐ भिकाल हातक ते न वाय वलि गृह २ सादा ॥ ॐ ति य धादि ॐ भना
 नं अं उर्द्ध वलि ॥ ॐ ॥ दाय दाय मनु ॥ ॐ य ॥ अनन मनु न दाय य काल य
 २ सादा ॥ ॥ दाद ॥ भ ॥ मउ ॥ सलि ॥ वाक ॥ ॐ ॥ सलि कर्मा सः
 दा विधि सलि माद ए मवव ॥ या गि सलि सर्वा ध स ॥ सलि द वा विद वना ॥ सलि
 उल ससु ग सकि दिय मना दन ॥ यु का सय वर्म न ऊ ॥ ज्ञान विज्ञान स र व ॥ ह
 य य नालि यि का ध सलि उला गि द वना ॥ वदि ना द वना सर्व कानि दूर्य न मा सु न ॥ अ

मय ॥ ति ३
 गि न यी दिय काल न या य ना सन ॥ द ह नि सर्व या या लि सफ ज म क ना य द ॥
 आ वा तिक मृ न दिय सर्व उति मि ना य द ॥ सर्व दिय व ना क उ य वि न द रु सा ध न ॥
 व उ दिय विं क उ सर्व सा न रु का व य ॥ सलि सानि स दाल श सलि उ व रु म ड
 ले ॥ दाय द न मा ग ल सर्व सा न रु काल य ॥ द ह नि सर्व या या लि अल श मल ना
 स ना ॥ सर्व सानि व ना द वा वि घ्ना न य भा व नि ॥ उ कि म कि य द दाय व दि ना ग ल
 या गि ना ॥ ॥ ग क उ ठ म हि स ध नी वा गृ ध श क डि का ॥ ए ना न व उ व का
 नि न ऊ य दाय व रि का ॥ व वृ य श ग ना य र द न य रु व व रि का ॥ न न य का

लिर्नदाय सर्वरुतिमिवायदं ॥ अथ दाययुजनी ॥ ॐ अस्मावकासाय न
म ॥ ॐ अस्मावकासाय न ॥ ॐ अस्मावकासाय न ॥ ॐ अस्मावकासाय न ॥
निदवादिमाग ॥ अस्मावकासाय न ॥ मरिमनरु लदा सकि पुत्रताये ॥ जिह्वा स
का कलिर्न अलियिजितनगा दययुलु घनन ॥ दिवर्सेतानयापि जयतु यत्र सदा सय
द्वेष सदवा ॥ अस्मावकासाय न ॥ वरु ॥ वतानि ॥ वरुदि सति समारुकी अग्नि सूरु करुदि
र्न ॥ अस्मावकासाय न ॥ अस्मावकासाय न ॥ अस्मावकासाय न ॥ अस्मावकासाय न ॥
॥ वरु ॥ यायादि लयांग सागमि यथायदा वरुजा वलि ॥ ॐ वलि गुरु ॥ ॐ वलि गुरु ॥

॥ वरु ॥ दाय ॥ जाय ॥ जाय ॥ अथ ॥ अथिर्नदाय नूर्य किति मयि रुवर्न सर्वदवामयव ॥
वैसर्वसिद्धिदना अस्मन्मनगना साधका सिद्धि काम ॥ सर्वकर्मोय कामि सकल रुत
मय अग्निमय सूरु ॥ ससावासावदना किमि नरु वरुने सुजयन मामि ॥ अथ दाय
युजा ॥ ॥ अथ दाय युजनी ॥ अथ दाय युजनी ॥ अथ दाय युजनी ॥ अथ दाय युजनी ॥
अथ दाय युजनी ॥ अथ दाय युजनी ॥ अथ दाय युजनी ॥ अथ दाय युजनी ॥
य ॥ वामदवाय वासिवा दाय गुरु रुमसदा ॥ ददातु दवदविन्या ॥ अग्निगि गल युव
की ॥ अथ दाय युजनी ॥ अथ दाय युजनी ॥ अथ दाय युजनी ॥ अथ दाय युजनी ॥

जें नैर्वा नैर्वा पदमगा ॥ ४ ॥ नैर्वा नैर्वा विनीत को भ
कथखाहा ॥ वा ॥ नैर्वा नैर्वा साहा ॥ ४

वाग्नि आदिन सुगर्भ विना

अनकया वहि कजा सुख साखी नीनामय

सामय कायगहन मथमखेवरुनजन ॥ अनादिवाधसीकास अज्ञाननिमिनायदं । तु
किमुकिमुददयं रुक्यामिसदादिन ॥ **उवनयमकु ॥ १ ॥** अमृत २ अमृतातवाय व
ककुडिनखाहा ॥ माहवायितद्यावेव बुद्धघागममवव । दीयतकममाधल सुव
याययलह्यति ॥ **दीयतकन ॥** आह्लाधाय ॥ * ॥ **विं ॥** महासमयसंस्तुन दिव्यमनायका
रुव । नवदयसमाशुकी कडिऊईनमासुन ॥ कलिंका कजमासं सलराटि टिरासू
गा ॥ **॥ रुवनयास ॥** निर्मालीनिर्मलदक यविईददसाधन । यसादिदुनराक
कवननसमाशुता कवनजन्मयमुचयत ॥ **॥ कवनयास ॥ ३ ॥**
की २ ॥ नानिधेय नूपा ॥ १ ॥ हविषा मनसा ॥ २ ॥
उष्मावर्षा निर्वम कवृत्तिरुहाय ॥

विषयसवा ॥ ३ ॥ सा ममूलजिकलक काटिसुख
समस्त ॥ ३ ॥ नानिधेय नूपा ॥ १ ॥ हविषा मनसा ॥ २ ॥
उष्मावर्षा निर्वम कवृत्तिरुहाय ॥

रूपपदवा ॥ १ ॥ नैर्वा नैर्वा विनीत को भ
नरी पनरुका मयवकी रुला निवदुपक ॥

वी कडिऊईनमासुन ॥ अखधननिवाखान ललूकीमगमवव । रुवननसमाशुता रु
वनजन्मयमुचयत ॥ **॥ रुवनयास ॥** निं ॥ मकमासिमहामासं रुकयंजनकवन । धयका
नवनदियी कडिऊईनमासुन ॥ मकं येदुयसंक निससथलमलुक । उवनवननसमा
रुता उलवजन्मयमुचयत ॥ **॥ रुवनयास ॥** निं ॥ आह्लाविज्ञानदंदाय बुद्धसमयव
चस । नजासितियतनिनी कडिऊईनमासुन ॥ लुग्यादिययाशुकी यटयलडिविसमट
। सवननसमाशुता सवनजन्मयमुचयत ॥ **॥ रुवनयास ॥** निं ॥ यवन रुवन उवन सवन सर्व
वनसुन ॥ **॥ वाल वामरुहन ॥** वामरुह अनाधिकारुहन **लिखन ॥** मथसु जि को
२ पाजसवा ॥ १ ॥ धर्माधर्म विदीधो आत्मा ॥ १ ॥ मनसा ॥ २ ॥ हानप्रदीपितित मकवृत्तिरुहाय ॥

नानिधेय नूपा ॥ १ ॥ हविषा मनसा ॥ २ ॥
उष्मावर्षा निर्वम कवृत्तिरुहाय ॥

क निर्वानेन दधु रक्षाहि धूवधु यन ममृत्तम ऊ
स गगाने स्माधि तापी प्रिता कान् मदिदी

ॐ सर्वत्र श्रीवन्द्येयं सर्वविद्विज्यदीपः ।
सर्वभूतिपद्मभागः कुरुदीनममस्तु ॥ ४

२५०० गायत्री साद (धनः) प्रवर्णित विष्णुः
यस्य सर्वव्यापितुः ॥ एषा श्रीधरवर्षी सुगन्ध

५ पाशशब्दा ॥ अन्तर्निर्जनकदविद्यभूतसंश्ल
सांनशास्त्राभ्युदयविपक्षिनिवृत्तिदत्त

योगशास्त्रादि॥ दुवस्तुतयना॥ १
 सि विदुःकुतमत्रीविदिकामरुमा विगुंरुहामिवसूयादिनिवावसानं॥

नंदयं॥घञ्ज॥दसन्वायं॥पुथमममन॥॥गृह्याकदयं॥वाक॥स्यामानका
 त्यादि॥यागिदयं॥संगानमममा॥जनत्यादि॥सगर्हदयं॥विनियमन॥॥
 कंदयं॥वाक॥अविनासाखनत्यादि॥दवक्षयन॥उहृन्त्यादि॥जागिदयं॥
 असेवर्लान्ग॥नित्यकर्मयाउदिरुकायाय॥सगर्हदयं॥विनियमन॥॥
 नाभलादि॥रुल॥यकान॥रुदक्ष॥॥समयानुकमालरु॥वाक॥जयनिकायादि
 ॥नमनीनाथयथादि॥यन्मि॥मज्झि॥महा॥माया॥जुकि॥कादयाये॥मृदवादिदाय
 जागमर्धन॥विनियमन॥संयुक्त॥निमित्ता॥थन॥जथासाक्षरु॥वत्तदायनास्तु॥सम

यानुककृष्ण॥दवक्ष॥इविय॥धनानकृष्ण॥यूनसमयानुककायाव॥गुनस्य॥थवर्ग
 कायाव॥महायागसुवाठकायाव॥वावडयानयाय॥महायागसुवाठ॥मकुमांस॥
 यागिति॥आदिन॥सगर्हदयं॥थमर्न॥रुदक्ष॥॥यागसुवाठ॥महायागसुवाठका॥गुनया
 सिवस॥यागत्र॥धमसुवकृष्ण॥॥अलि॥मकु॥मांस॥महायागसुवाठका॥रुवयाथय
 सन॥दलुदकाठ॥थय॥सन॥॥एकानक॥अभयुव॥वलिविसर्जन॥संज्ञानमडा
 ॥यागि॥आदिन॥सगर्हदयं॥सर्वलकाव॥अवगर्धन॥वा॥॥यवर्ल॥रुववावर्क॥सर्वव
 ॥दिजागय॥निवर्ल॥रुववावर्क॥सर्ववर्ल॥यथक॥॥वालवक॥समताया॥सर्ववर्ल॥दि

जानय ॥ वक्राक्षवद्वतनेव सर्वसर्ववर्धयुधक २ ॥ बालजन सकलसं पुत्रमष्ट
लयात्मान दवक्कय ॥ वलिसकलसं कायावने ॥ कर्नक यादव २ वलिनास वय
॥ मूडालायनयाय ॥ ॥ वानराक्ष ॥ बालिविय ४ ॥ नर्थन यागयना ॥ शाख ॥ व ७ हूया
दयाकुरुत अलिमय कायाव ॥ दवक्क आदिन संगतविर्यद ॥ वाक् ॥ अविनासाया
दि ॥ रुथार्थ नावाय ॥ वियहाय ॥ ॥ पुनर्यकलीकयुजा ॥ यशवलिया आगदवा
वाम्नादाइवा कलीकसग ॥ गच्छत ॥ ॥ नमः पुजन ॥ पुननमकाव ॥ यद्रासायनम
॥ कृष्णायनम ४ ॥ या ॥ ॐ हिलि २ अस्मायरुट् ॥ कनसाधन ॥ ॐ मार्त (गन्धनाय क

निरुकायनम ४ ॥ ॐ मार्त (गन्धनाय नृनाधिकायनम ४ ॥ ॐ मार्त (गन्धनाय मध्यमायन
म ४ ॥ ॐ मार्त (गन्धनाय नृनायनम ४ ॥ ॐ मार्त (गन्धनाय अगुकायनम ४ ॥ हिलि २ अ
स्मायरुट् ॥ ॐ निकलीन्यास ॥ ॥ ॐ वं अर्ग न्यास ॥ जलयाग ॥ अर्घयाग ॥ हनसूचि ॥
आलयुजा ॥ ॥ वक्राक्षव ॥ वक्राक्षव वदुद्वान नृगुप्तसंरुर्नगथा ॥ अस्मयशायसा
हिलि २ नलमध्यथायय नृकन ॥ नृगुप्तनययर्क ४ नदयविविमली कलकलुकायात्
हय ॥ नलमध्यवधुनाधनिव ४ नकि ४ आयमालिविनिय ४ ॥ सादवीक यवृका मारिम
नरुलदा कामसिद्धिददाउ ॥ धनउडावसिलाक ॥ ॥ पुजन ॥ संवरुनि आवाहन ४ ॥

१। हिलि २ उच्चिष्टमुख्यावलिगृह २ खादा ॥ धउच्चिष्टमहावलि ॥ आवाक ॥ मू
दा ॥ धूय ॥ दाय ॥ जाय ॥ ताप ॥ धमादीदेकेयर्ह गलिनत्तु विरुता विनिर्नर्कना
ली ॥ हलुखड्डु कर्हि नदयनधर्न तिक्कल्लकयाली ॥ वकोकमच्छ मासं जवत्त
विवाटे मादिनयनसस ॥ मार्गिणीसुदेव सगलगविवर्न नोमिउच्चिष्टनाथ ॥ नमस्स
यनर्मदवी सिद्धिमार्गदगन्धना ॥ सर्ववक्त्रसखन मानदसुदिनालय ॥ सर्वभक्ति
क्रियासिद्धि वाञ्छितार्थदकसम ॥ विद्धिसिद्धिगदाभक्ति लुक्कामावाग्यसंयुदा ॥ ॥ नथ
॥ ॥ उकानक ॥ नावाल ३ ॥ ॥ वलिक्कय ॥ वत्तसुखोदयाज्ज सुवा नाया वा य यक्क

वलिक्कय ॥ गन आनयिनायस ॥ यामि थंथूलखस ॥ १५ वत्तक उयि ह्लाहालख
स ॥ गनवाठयनिस दगुलियादाया वलि वलिलाहास ॥ धनवलिक्कय ॥ उच्चिष्ट
य ॥ कल्लकाशिवक यामि आदिनविय वासहाक ॥ उकार्ववायुवाज्जयादि ॥ यामि आ
दिननामूलदया ॥ ॥ अखलुधनकावय ॥ दवत्ता यउदकमउली वज्ज
सायित्तमउलीकावय ॥ ॥ दधसकवा वायदा १ वरु सिद्ध जजामका खान धूय दा
य कवाठावासी दवसावकीविय ॥ दधवत्तवास नयूदवसावकी नयथमसावकी
सताविय ॥ उजमान जानत्या लूमोद्धत्ता ॥ ॥ ॥ अखलुधनमउली यानवज्जस

मायुर्क. नाजायुथा कर्तदायं. हामिर्लंजानुसंतिर्न. दवदयासमात्राध. आयुयुग
 नलियं. विष्णुर्कसंयदालम्. मंगलीनिवसर्वदा. नमस्तुतेनवदेव. विनयुयावताव
 की. विननिरेनवावर्क. सर्वदेवयुदवनि. सांताविसगलामर्च. ममतायनमन्त्रो. उ
 (थाकाविधिनासमाक. रुडुविताययुजिर्न. उनाधिककर्तयैजा. उधिविदमचिदकी.
 सैयुर्लुसर्वरावायि. कमनीयनमन्त्रो. गच्छ २ गलामर्च. स्वस्वकनगर्गलय. नक २
 मरुसानो. यूननायविजयायव. ॥ दधवास्. वाद. मर्गकायाव. दवशावर्क. वि
 यागुवि. दवकद्विय. ॥ थवकसाकगुलि. ऊजमाननचयन. ॥ दवमादिन. यागि.

ती नजन. ॥ थाथाकाका. नमस्तुतेनवा. ॥ वधुस्योदयाऊरु. ऊजमानकाय. ॥ वाक. ॥
 श्रुत्वावनसंकासं. श्रुत्वावलसंरुव. श्रुत्वा सकलं गार्थं. श्रुत्वा सकलं नमः. सैमात्रमाहनी
 दवीसृष्टिस्त्रिभुवकात्रिती. आयुयुगजमात्रार्थं. गजावृद्धिकत्रीगुली. ॥ स्वयं कलनाधनगत्वा
 संप्रसन्नवनी. स्वयं यनमनी. कोन. ॥ निवदयावताव. धीकृताथविनविन. जीऊजिकाम
 न. श्रुत्वा. दायजागार्धनविधिसमाक. ॥ ॥ ॥

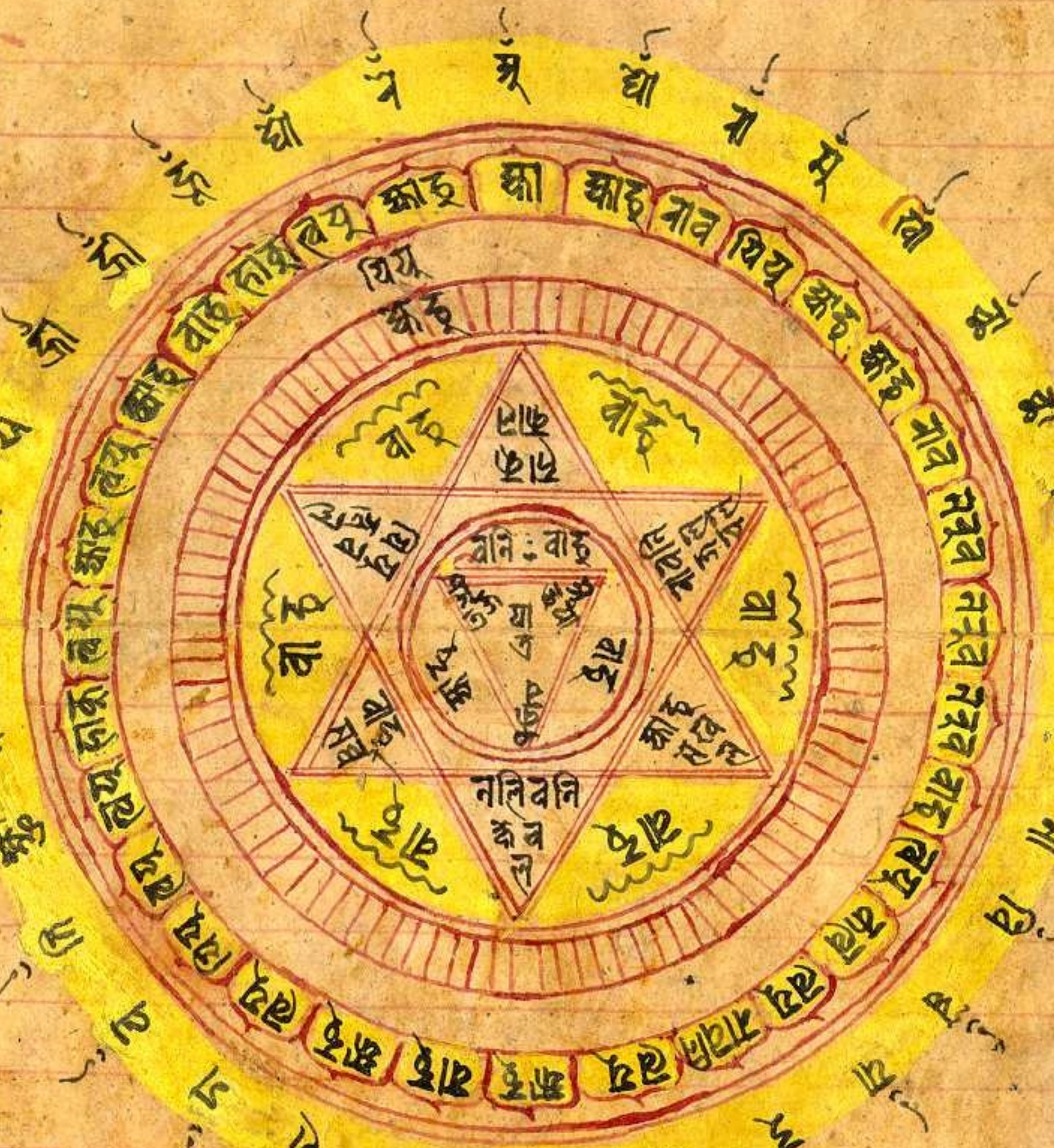
१ सद्यन् १६४ कार्तिककृष्ण १३ श्रीगालवाल. धकृत् सैयुर्लुमिति. ॥ लिखितकर्माचार्य. नाना
 यनन. ॥ गुरुमस्तुसर्वदा. दाद्यमायुननु. ॥ ॥ रावानिथानि. ॥ ॥

त्रिपुह
 मतिरुत्तरं कुरु. दवयवायुनादवी. त्रिपुह
 कात्रह. ॥

१॥ गमधूमजवनाश्रुलं अलियं च मर्त्यं । लवंदुमात्रिर्वंशुलि जातिप्रलादिमिष्टराक ॥ धनदायया
 आयुषि ॥ ॥ सुगमिस्तानि सूर्यं जवा (गमधूमजवनाश्रुलं) नवदयसमायुक्तं दवाणेकात्रययिथ ॥
 धननवदय ॥ ॥ उद्यानकात्रिकावन्दनकवन्ददिवकरं । वामदवासरुणधनि ४ जीवव्याम
 वन्द्यरुथ ॥ दवायाठिकनकर्माना स्वट् कानादिकर्यवक । कार्याकात्रनकर्मानि क्रियाकार्यासृति
 द्विर्द ॥ दगक्रकूटमहिरवंच जीवागृधश्चकचका । एगानवसिन्नकाना नैजयनूदायवृत्तिका ॥
 वन्यैवगतागरे घनयुक्तुवृत्तिका । ननयद्यानिर्गदायं सर्वरुणिमात्रायहं ॥ धनदायया ॥
 ॥ ॥ सर्वगतिलकीमिष्टं ४ सर्वश्रान्तकानयनं । विकटसद्वयार्क कालिचूर्णुवासरयन ॥

कालिप्रयविनामूर्क ४ कालिकालविभावर्न ॥ कालियाआयधियाथ ॥ धनकालयावाद्य ॥ ॥
 १॥ दयावालयनिक्रियविधान ॥ दयारुनासिय ॥ ॐ ह्रीं श्रीमद्वायनमः ॥ ॐ ह्रीं विद्यागवायनमः ॥
 ॥ ॐ ह्रीं निवगवायनमः ॥ धननासिय ॥ ॐ नासियुगदय ३ ॥ ॐ कर्तुदय ३ ॥ ॐ ददय ॥ ॐ निव
 सि ॥ ॐ निखा ॥ ॐ उयनयसर्न ३ ॥ ॐ नमस्कृदयनं ॥ ॐ महायागुयगाकायहृट् ॥ ॐ सादिकन
 श्रीगयास ॥ वक्तुयास ॥ ॥ वाक् ॥ वक्तुयास ॥ विष्णुसर्कननवा । ननाहृयनिवक्रानि नि
 खवक्रियजायति ॥ गमयति विष्णु ३ ॥ वालर्गथिक्कियधमकुन ४ ॥ श्रयादि ॥ मासुनक्रयादि ॥ उका
 नैवायुविर्जयादि ॥ धयदयाव धवमालसहाय ॥ सायिनासायिनायादि ॥ सानयाय ॥ धनसानविधि ॥ ॥

A red-inked diagram of a vertical rectangular structure, possibly a tower or a column, with internal cross-bracing and a decorative top. The structure is composed of several horizontal and vertical lines, with diagonal lines forming an 'X' pattern in the interior. The top is decorated with a series of small, pointed shapes, and the bottom is rounded. The entire diagram is drawn in red ink on a yellowish, aged paper.



गङ्गानामवतुङ्गम्



ऊरु

श्रुतिवर्ग

क शी

वर्ग

श्रुति
याक

वर्ग वर्ग

श्रुति
ज



यशस्वति

समशान्तक



महायाज

महायाज

गानवर्ग
समशान्तक
श्रुति

श्रीलोक



श्रीलोकवर्ग

श्रीलोक



काल
काल
काल
काल
काल
काल

श्रीलोक



सर्ववर्ग

वायु



सर्ववर्ग

नज



जलवर्ग

आय



नमो भगवते

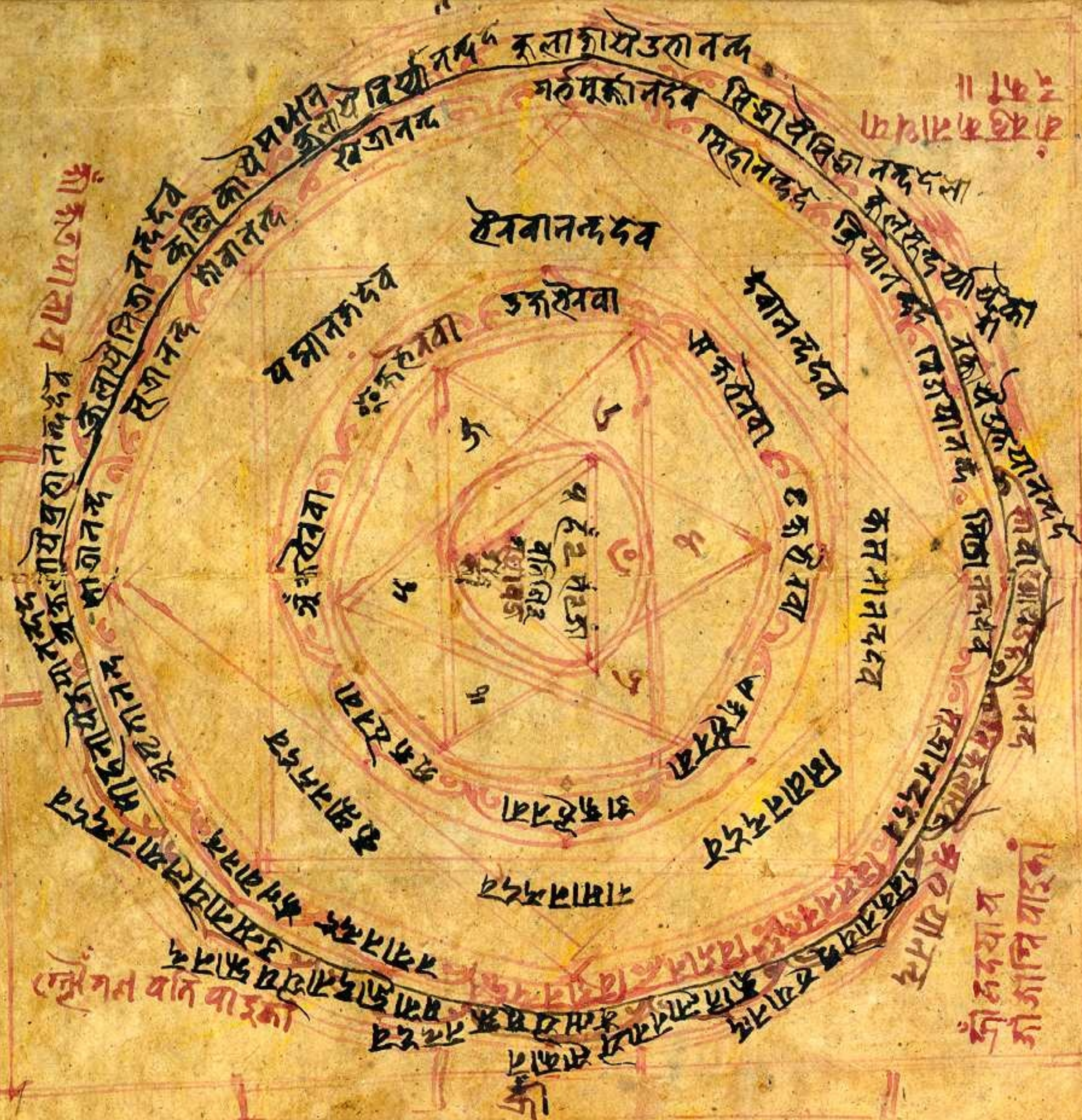
प्राथिवी



कालवर्ग



A close-up of a musical manuscript page. It features a single staff with a treble clef. A large, ornate initial 'A' is written in dark ink, with decorative flourishes extending into the staff. The paper is aged and yellowed, with some visible staining and a small red dot near the top right.



ॐ नमो श्री सिद्धि लक्ष्मि देव्यै नमः ॥ अथ ध्याता ॥ ध्याता यामयय कृत्वा शु
द्धमावादिमल ययुर्न नचयित्वा सु शुद्धं नरुनादिमल ययुर्न ननुमायुर्थ
सं कृं य ददययु टितमात्मानं यत्रा का (न) नच के न सं कृत्वा यथ (न) यथा द
हता ध्याय नन दत्त ववा सी विरुध्य न कृ न्य रा वं सनिर्वा विग दं दय त्रि शु
द्धं कार्यका न स त्रहि नमति मयय क नच तत्ता दि विही नं सर्व ग नं यत्र मान
नं ध्याय न ॥ दद्यात्तुल न व कृ रा वं सु कृत विष्णु यत्र त नृद रा वं नृत्वा स
नां मूर्ति नृत्वा य नृत्वा यत्र मान नद मान नद नृयं पू न क नानी य कं ह क न

हदिनिया ॥ ॥ नमो ध्याता ॥ ॐ श्री गी नाथ पादुकां युक्यामि ॥ वद
नं (ध) ॥ ॐ श्री महा लक्ष्मी भूम्बा याद ॥ विदुद (न) ॥ ॐ श्री ध्याम वा भं ह्य त्री भूम्बा
याद ॥ वाम नरं ॥ ॐ श्री खच त्री भूम्बा याद ॥ वाम नासा यूट ॥ ॐ श्री दि कच त्री
भूम्बा याद ॥ वक्र ॥ ॐ श्री (न) च त्री भूम्बा याद ॥ दक्ष नासा यूट ॥ ॐ श्री रुच
त्री भूम्बा याद ॥ दक्ष नरं ॥ ॥ नृत्वा यथ मा वाम क म ॥ ॥ अथ सु ल न्या
स ॥ ॐ श्री खं ॥ हदि ॥ ॐ श्री रुं कं (०) ॥ ॐ श्री लं ॥ नातु नि ॥ ॐ श्री वं ॥ यवी ॥ ॐ
नां मं ॥ त्वक (न) य ॥ ॥ नृत्वा न य च कं ॥ ॥ सुं य म (ध) ॥ ॐ श्री नमः सर्व सि

ॐ नमः ॥ सुकलमनुमानः ॥ नारी ॥ यत्नजनवत्सल ॥ ददि ॥
 दविमहाकालि ॥ कलकूप ॥ कालनाभिनि ॥ वक्र ॥ दूँ ३ ॥ सीदमदनाधुना
 ॥ गणया ॥ खं कनूर ॥ नगया ॥ सुत्रासूत्रकन्यकां ॥ निवसि ॥ नियन्त्रि
 दादहाक ॥ ॥ कौ वक्रनै ॥ ॥ विन्दो ॥ दूँ वक्र ॥ क (१८) ॥ रुट्टुददि ॥ रु
 द्बुधधन ॥ रुट्टुनारी ॥ स्वाहागुद ॥ ॥ तिकलुकमननवाक्रीन्यासः ॥
 ॐ नमः सर्वसिद्धिदायिनी स्वाहूर्ध्ववक्रनाथयायू ॥ नमः पूर्वसिद्धिमाह्वयः ॥
 पूर्व ॥ नमानिद्यादिगानन्दनदितायेदकिवक्रनाथ ॥ सकलकलवक्रना

खुं वलाश्कलनाथ ॥ वाममालो ॥ खुं नननूधित्राकुवधरुक्तिकयालनाथ ॥
वामवाहो ॥ ममस्वनाकुनमर्द्धश्चकार्जनाथ ॥ वामसुख ॥ खादिश्मूधनाथ ॥ द
करकल ॥ ० गिहूलनहिस्त्रिश्चिहूलनाथ ॥ दकवाहो ॥ ० क्विस्त्रिश्चिहूलनाथ
दकसुख ॥ खुं स्वप्ननाथयश्चमनाथ ॥ दकमनिवध ॥ खुं कदयश्चाननाथ ॥ दकक
नगल ॥ ० निसुलन्यासादिगीयः ॥ ॥ नताललाटादिवामकमत ॥ खुं ललाट
कौनन ॥ दूंगल ॥ हांछा ॥ ऊं सुख ॥ कौं वाहो ॥ कौं कर्नायुलीषू ॥ नमः
या ॥ ॥ यथजिउनो ॥ महात्राव ॥ जंधार्या ॥ महाक्षपाद ॥ विविद्या

नयादांयुलो ॥ सुमउदकयादांयुलो ॥ मवालिनीयादयाः ॥ महाकालिजंधार्या
॥ कामनाजिउनो ॥ विविश्रविद्या ॥ अतिरुक्तिकर्नायुलीषू ॥ यनमक्तिकर्ना
सायहक्तिवाहो ॥ योदिहत्रिस्त्रि ॥ मनाचकर्मतिकल ॥ गादिपरुजिउनसूख
गल ॥ निवकुसुम ॥ खुं वृद्धवर्ण ॥ कौं कधी ॥ दूं आधाम ॥ हांछाधि
सुन ॥ ऊं मनिदूत्रक ॥ कौं अनाहन ॥ कौं विहो ॥ नआरुह ॥ मः ना
सा ॥ ० निसुलीययासूअनामः ॥ ॥ अनकनेयवदनामः ॥ खुं आधा
न ॥ सुदूनाहन ॥ मंगलनि ॥ हांविहो ॥ वंमूर्धचद ॥ उं नाद ॥ यांनिनाधि

कायी ॥ (गं) वायिन्या ॥ वसमनायां ॥ त्रिकलाकूल ॥ सुटमनामयां ॥ कुंउ न
न्यां ॥ सुटममवाक ॥ कुंकोषाउलक ॥ सुटसुआक ॥ सुवीयनाक ॥ सुटक
ल ॥ ॐ निमल यनायास ॥ ॥ सुं वमनै ॥ सुटत्वक ॥ मनाया
य ॥ हांविन्दो ॥ यनको ॥ उं वामक ॥ सुं दकक ॥ सुं वामनै ॥ सुं दकनै
उ ॥ त्रिवामनासायूट ॥ सुटदकनासायूट ॥ सुं वामनै ॥ सुटदकग ॥ सुं
कुं वक ॥ सुटजि कायी ॥ सुं दक ॥ सुटनिखायां ॥ ॐ निमल यनायास ॥
यास ॥ चतुर्थ ॥ ॥ सुं कुं ॥ उम्वननाथ वमनायली श्रम्यायाइका ॥ त्वक ॥ सुं ॥

खूं ऊं ह्रीं कमला रुवनाथ माहेश्वरी अम्बाया कां ॥ त्रक ॥ खूं ऊं ह्रीं गगनाथ को
 मानी अम्बाइकां ॥ मांस ॥ इति रुनाथ नाथ वेष्म्वी अम्बाया कां ॥ मदसि ॥ इति लाम्ब
 रनाथ वात्राही अम्बाया कां ॥ अरुणि ॥ इति रुनाथ रुद्रायनी अम्बायाइकां स्त्रायी
 इति रुवनाथ वासुदेवा अम्बायाइकां ॥ मङ्गायां ॥ इति रुद्रायनी नाथ महाल श्रीः
 अम्बायाइकां ॥ वल्लयां ॥ ॐ नित्यमद्य कृष्णाय नमः ४ पंचम ॥ ॥ खूं ऊं ह्रीं ४ अजि
 ननाथयाद ॥ सद्ययाद ॥ ॐ ऊं ह्रीं ४ अनन्ताम्बायाद ॥ वामयाद ॥ ॐ ऊं ह्रीं ४ ॐ नूयान
 ननाथयाद ॥ दक्षिणयाद ॥ ॐ ऊं ह्रीं ४ ॐ रुद्रायनी अम्बायाद ॥ वामदक्षिणयाद ॥ ॐ ऊं ह्रीं ४

उपयनाथयाद ॥ दक्षात्रो ॥ ॐ हं स ॥ उर्ध्वगमिनाम्नायाद ॥ वामात्रो ॥ ॐ हं स ॥
याद ॥ दक्षयात्र ॥ ॐ हं स ॥ मतिजम्नायाद ॥ वामयात्र ॥ ॐ हं स ॥ लूफदवनाथ ॥
दक्षकत्र ॥ ॐ हं स ॥ ६ लूनाउम्नायाद ॥ वामकत्र ॥ ॐ हं स ॥ ७ कामेनाथयाद ॥ दक्ष
वाहो ॥ ॐ हं स ॥ ८ जेना वलम्नायाद ॥ वामवाहो ॥ ॐ हं स ॥ ९ आघानन्दनाथयाद ॥ दक्ष
॥ ॐ हं स ॥ १० ओकनालायाद ॥ वामस्क ॥ ॐ हं स ॥ ११ जीवनाथयाद ॥ ककुदि ॥ ॐ
हं स ॥ १२ कृष्णनूजीवायाइकां युक्तयामि ॥ ॐ नियामलाङ्कन्यास ॥
विनायासनदवनि, यामनं जयतमदा । सर्वनुनि ॥ रुर्लनस्य, वधित्रकलुयवन् ॥

ॐ निधारा न्याससमार्थ ॥ ॥ महाधारा कर्यन्यासा यः कर्माणि दिनदिनवद्वो
सर्वे नमस्यन्ति किमुतान्यमूनीवता ॥ महाधारा कर्यन्यासा कृत्वा यत्र निवारवग्न
मन्त्रीनेवारुसंदहा नियहानूय रुक्रम ॥ महाधारा कर्यन्यासा यत्र विष्णुनि वाद
यथादवास्मर्षय कृत्वा किमुतान्यमूनीवता ॥ यः धारा न्यासगण्य स्यात्स पर
सर्वयागि हि धारा न्यासविहीनस्तु सप्तमयस्य यावन्ति ॥ सा चित्रा नृत्तमायाति
नत्र कं यति ययन ॥ ॐ ॥ ॥